9

परनति सब जीवनकी

परनति सब जीवनकी, तीन भाँति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक रागहरनी ॥टेक॥
तामे शुभ अशुभ अंध, दोय करें कर्मबंध ।
वीतराग परनति ही, भवसमुद्रतरनी ॥१॥
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी ॥२॥
त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप।
शुभमें न मगन होय, शुद्धता विसरनी ॥३॥
ऊँच ऊँच दशा धारि, चित्त प्रमाद को विडारि ।
ऊँचली दशातें मति, गिरो अधो धरनी ॥४॥
भागचन्द' या प्रकार, जीव लहै सुख अपार ।
याके निरधार स्याद-वाद की उचरनी ॥५॥

सभी जीवों की परिणति तीन प्रकार से बताई गई है - पुण्य, पाप और राग का हरण करने वाली (शुद्ध)॥ टेक॥

उनमें पुण्य-पाप परिणति (शुभाशुभ) बन्धरूप होती है जिससे कर्म बन्धन होता है और शुद्ध वीतराग परिणति भवरूपी समुद्र को पार कराती है॥ १॥

जबतक मनोज्ञ शुद्धोपयोग प्राप्त न हो तबतक ही पुण्य परिणति करने योग्य कही है॥ २॥

पुण्य (शुभ) रूप परिणति को त्यागकर पाप के कार्य मत करो किन्तु शुभ में मगन होकर शुद्ध परिणति को भूलना नहीं चाहिए॥ ३॥

ऊँची-ऊँची दशा को धारणकर चित्त के प्रमाद को खत्मकर ऊँची दशा से नीची दशा की ओर मत गिरना॥ ४॥

भागचंद जी कह रहे हैं कि इसप्रकार ही जीव अपार सुख को प्राप्त करता है। इसका निर्धारण करना ही स्याद्वाद की कथन पद्धति है॥ ५॥